

प्रसापमत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, कुनिता निवृत्ती
वीरकर ने एम.फिल. उपाधि के लिए यह तघुन्धोध प्रबन्ध मेरे
मार्गदर्शनमें लिखा है। यह उनकी मौतिक रचना है। पूर्व
योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है। जो तथ्य इस प्रबंधमें
प्रत्युत्ता किये गये है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

निर्देशक,

प्राचार्य,

डॉ. बी. बी. पाटील,

महाचीर महाविद्यालय,

कोल्हापुर।

स्थल :- कोल्हापुर।

दिनांक :- / / १९९९।



भू मि का

=====

बी. ए. का इमाहान देनेके बाद मैं मेरे मामाजीके गाँव गई थी। उस छोटेसे देहातमें मुझे पंद्रह दिन रहनेका घौका मिला। उन पंद्रह दिनोंमें मैंने वहाँके लोगोंका अभावपूर्ण जीवन, आपसी झगड़े, घदेष-कलह, गाँव की व्यावस्था, अलग-अलग जातियोंके जीवन-चापन के हरसक पहलूको देखा था।

एम. ए. में हमें प्रेमचन्दजीका "गोदान" ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यास पढ़ाई के लिए लगाया गया था, जो मुझे बहुतही पसंद आया था। क्योंकि गोदान का नायक "होरी" का चरित्र भारतीय ग्रामीण किसान का ध्यार्थ चरित्र है। अतः जब एम. ए. की उपाधि के द्वारा लघु-शोध प्रबंध के लिए विषय चुनने की बात आयी तो मैंने मेरे निर्देशक के सामने ग्रामीण जीवन पर शोधकार्य करनेकी इच्छा प्रगट की। मेरे निर्देशक भी तृरंत तैयार हुए और मैंने "प्रेमचन्द की कहांनियोंमें चित्रित ग्रामीण जीवन" एह विषय तथा कर इस विषय पर कार्य प्रारंभ किया।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंधको कुल पाँच अध्यायोंमें विभक्त किया गया है।

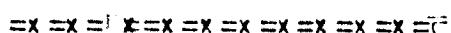
- १] पहले अध्याय में कृषक जीवनके लेखक प्रेमचन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व में उनका जन्म, वयपन, परिवार, शिधा, नौकरी, विवाह, रिशोदार, मित्राविवार, साहित्यिक प्रेरणा आदि का चित्रण करते हुए उन्हें अपने जीवनमें कौन-कौनसी कठिनाईयोंका सामना करना पड़ा और अंतमें किस बीमारीके कारण उनकी मृत्यु हो गई इसला चित्रण किया गया है।
- २] द्वारे अध्यायमें प्रेमचन्द युगीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक परिस्थितियोंका परिचय देते हुए इन परिस्थितियोंका प्रेमचन्द के साहित्यपर किसारह प्रभाव पड़ा हुआ का चित्रण किया है।
- ३] तीसरे अध्यायमें प्रेमचन्द की कहांनियोंमें ग्रामीण जीवनका ध्यार्थ चित्रण

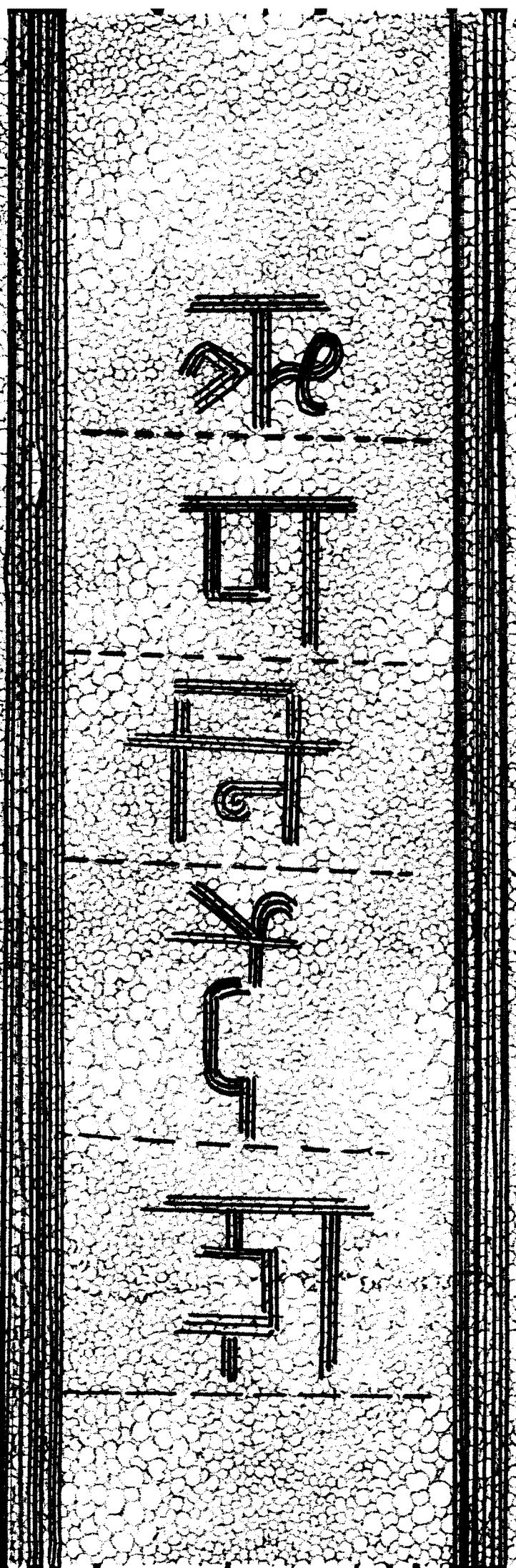
प्रस्तुत करते हुए "ग्राम" शब्द के अर्थकी छापिए और वैदिक कालसे लेकर अंग्रेजी शारान कालताक के ग्रामोंके इतिहास को स्पष्ट करते हुए प्रेमचन्द्रकी कहानियोंमें चित्रित ग्रामीण जीवनमें शोषणके विविध स्म, परिवार, नारी चित्रण, वहाँ के लोगोंका ज्ञान, आपसी-झगड़े, धर्म का पाखंडी रूप, जातिभेद, तंत्र-पंत्र, झोड़-फूँक, दुआ-न्तावीज, पूजा-पाठ, तोतर, मूठ आदि के प्रति अंधविषयात्, तथा ग्रामीण समाजमें विरादरी और पंचायत व्यवस्था का महत्व आदि का विश्लेषण किया गया है।

४] तो यौथे अध्याय में उनकी कहानियोंमें चित्रित विधवा समस्या, वैष्णवा समस्या, दहेज पृगा की समस्या तथा अनगेल विवाह की समस्याओंका चित्रण करनेका प्रयास किया गया है।

५] उपस्थिति के अंतर्गत प्रेमचन्द, युगीन तत्कालीन परिस्थितियाँ, उनकी कहानियोंमें गृहीण जीवनका यार्य चित्रण और कुछ साप्तरामोंके बारेमें जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं उनका उल्लेख किया गया है।

अंतमें उपसंहार के साथ संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ और राहायक ग्रंथोंकी रुची दी गई है।





श ष नि दं श

जीवनमें कृष्ण सैसे होते हैं, जिसे उक्ता होना संभव नहीं होता और न होनेकी इच्छा ही होती है। इसीतरह का क्रण मुझपर मेरे प्रधेय गुस्वर्य प्राचार्य डॉ. ली. ली. पाटीलजी की कृपा का है। उनके आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफलन यह प्रस्तुत ग्रन्थ-शोध-प्रबन्ध है। यह प्रबन्ध उनके आशीर्वदि एवं कृपापूर्ण सक्षम निर्देशनमें लिखा गया है इसे मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ। सातत्य पूर्ण व्यस्तताके बावजूद आपने निरंतर प्रेात्ताहन एवं प्रेरणा देकर मुझे कभी हतोत्ताह होने नहीं दिया। आपके आत्मीयपूर्ण निर्देशनने इस शोधकार्य के उंतर्गत मेरी घरेलू निजी कठिनाईयोंको भी कभी अनुभव नहीं होने दिया, बल्कि आपसे मुझे हर बार नया उत्ताह मिलता गया। अतः आपके अप्से मैं उक्ता होना नहीं चाहती, क्योंकि आपकी सहदयताको आभारके घन्द लड्जोमें बौधकर मैं सीमित नहीं करना चाहती, परंतु आपकी इस कृपा का सहसात मुझे जीवनमें हमेशा रहेगा। आपके हस्ती रनेह, प्रेरणा और आशीर्वदि की मैं सदैव अभिनाशी रहूँगी।

आदरणीय प्रा. कण्बरकर, प्रा. मोरे, प्रा. वेदपाठक, प्रा. तिवले, प्रा. द्रविड़, प्रा. हिरेमठ, प्रा. लवटे, प्रा. सौ. जैन, प्रा. कु. भागवत का आशीर्वदि और प्रेरणा सदैव मेरी साथ रही अतः उनके प्रति मैं तत्त्विनय आदर प्रकट करती हूँ।

साथी राजा शिव छत्रपति कला और वाणिज्य महाविद्यालय, कानडेवाडी के अध्यक्ष बाबा कुण्ठकरजी और इस कालेजके सभी प्राध्यापक जिन्होंने मुझे समय-समय पर प्रेात्ताहन दिया उनके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

महावीर महाविद्यालय की ग्रन्थालय सौ. एल. जे. ग्रेंट और कु. दुगे, श्री. घाटगे हन्होंने गुज्रे समय-समय पर ग्रन्थ देकर सहायता की है, अतः मैं उनके प्रति भी आभारी हूँ। साथी शहाजी कालेज और शिवाजी विश्वविद्यालय के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

जिंदगीमें बहुत हादरों होते हैं। उनमें से एक हादसा मेरे पिताजीका स्वर्गवास। उनकी इच्छा तथा प्रेरणासेही आज मैं सम. फिल. तक नी पढ़ाई पुरी कर

सकी हूँ। मेरी माता, बड़े भाई सुहास, शरद, राजू, बहन नूतन, मेरी सहेली हालीमा करीमा और उनका परिवार इन्होंने इस प्रबंध नेखनके दौरान मेरी बहुत मदद की है, जिसका लयान मैं कभी नहीं कर सकती।

मेरी
इस प्रबंध की पूर्तिमिंगी जाने-अनजाने में सहायता करनेवाली सहेलियाँ और वर्गमित्रों तथा हितचिंतकोंने सामग्री संकलनमें मुझे निःस्वार्थ सहयोग दिया उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

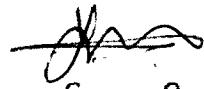
इस लघुसोध प्रबंधको टंकलिखित करनेका कार्य मैंने खुद [कु. वनिता नि. वीरकर] किया है। प्रबंधको जिल्दसाज चढ़ानेका काम श्री. उदय गायकवाडने बड़ी आत्मीयता से किया है, उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ। प्रबंधके अंतरीक भाग को सुशोभित करनेका काम मेरे बड़े भाई राजू ने किया है।

अंतमें मैं इस कृतिमें होनेवाली तुष्टियोंको स्वीकार करते हुए यह लघु-गोध-प्रबंध आपके अवलोकन के लिए प्रस्तुत करती हूँ।

कोल्हापुर

दि. ३१.८. १९९१।

आपकी कृपा भिलाषी


[कु. वनिता नि. वीरकर]

====

प्रावक्षन

१ - २

शृणनिर्देश

१ - २

अध्याय पहला :- कृषक जीवनके लेखक प्रेमघन्द ।

१ - १६

अध्याय द्वितीय :- प्रेमघन्द युगीन परिस्थिराँ ।

१ - २३

१] राजनीतिक परिस्थिति ।

२] सामाजिक परिस्थिति ।

३] धार्मिक परिस्थिति ।

४] आर्थिक परिस्थिति ।

५] साहित्यिक परिस्थिति ।

अध्याय तीसरा :- प्रेमघन्द की कहानियोंमें ग्रामीण जीवनका
यथार्थ चित्रण ।

१ - ४०

१] १] "ग्राम" किसे कहते हैं ।

२] "ग्राम" शब्द का परिचय ।

३] ऐदिक कालमें ग्राम ।

४] रामायण-महाभारत कालमें ग्राम ।

५] बौद्ध कालमें ग्राम ।

६] गुप्त कालमें ग्राम ।

७] मुगल कालमें ग्राम ।

८] अंग्रेजी शासनकालमें ग्राम ।

- २] ग्रामीण जीवनमें शोषणके विविध रूप ।
- ३] परिवार का चित्रण ।
- ४] नारी चित्रण ।
- ५] ग्रामीण जीवनमें धर्म का पालनी स्था, अंधविश्वास और जातिभेद ।
- ६] ग्रामीण समाजमें व्याप्त तंत्र-मंत्र, झाँड़-मूँँक, दुआ-तावीज, पूजा-पाठ आदि का चित्रण ।
- ७] ग्रामीण समाजमें बिरादरी और पंचायत व्यवस्था का महत्व ।

अध्याय चौथा :५ प्रेमचन्द की कहाँनियोंमें कुछ असम्पूर्ण ।

१ - २५

- १] विधवा समस्या ।
- २] केषवा समस्या ।
- ३] दहेज प्रथा की समस्या ।
- ४] अनमेल विवाह की समस्या ।

उपसंहार

१ - ८

तंदर्भ गुंथा सूची ।

१ - ४

आधार गुंथा सूची ।

१६५